डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए.पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔंध' का जीवन-परिचय

नाम — अयोध्या सिंह उपाध्याय
उपनाम — हरिऔंध
जन्मतिथि — 15 अप्रैल, 1865
जन्म-स्थान — निजामाबाद, आजमगढ़ (उत्तरप्रदेश)
माता का नाम — रुक्मिणी देवी
पिता का नाम — पं. भोला सिंह उपाध्याय
कार्य क्षेत्र — अध्यापक एवं लेखक
मृत्युतिथि — 16 मार्च, 1947
मृत्यु-स्थान — निजामाबाद, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश)

हरिऔंध जी मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् काशी के क्वीन्स कॉलेज में प्रवेश लिया, किन्तु अस्वस्थता के कारण इन्हें बीच में ही अपना विद्यालयी अध्ययन छोड़ देना पड़ा। तत्पश्चात इन्होंने घर पर ही फ़ारसी, अंग्रेजी, संस्कृत भाषाओं का अध्ययन किया। बाद में बीस वर्ष तक कानूनगो के पद पर कार्य किया। कानूनगो पद से अवकाश प्राप्त करके लेखक ने 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी' में अवैतनिक रूप से अध्यापन कार्य किया। उनके जीवन का ध्येय अध्यापन ही रहा। इनका जीवन सरल, विचार उदार और लक्ष्य महान था।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की रचनाएँ :—

नाटक :— 'प्रद्युम्न-विजय' तथा 'रुक्मिणी-परिणय'।

उपन्यास :— हरिऔध जी का प्रथम उपन्यास 'प्रेमकांता' है। 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' प्रारंभिक प्रयास की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

काव्य-ग्रंथ— वस्तुतः हरिऔध जी की प्रतिभा का विकास एक कवि के रूप में हुआ है। इन्होंने पन्द्रह से अधिक छोटे-बड़े काव्यों की रचना की। इनके प्रमुख काव्य-ग्रंथ इस प्रकार हैं—

*'प्रियप्रवास'— यह विप्रलम्भ शृंगार पर आधारित महाकाव्य है। इसके नायक व नायिका शुद्ध मानव-रूप में सामने आये हैं। नायक श्रीकृष्ण लोक-संरक्षण तथा विश्व-कल्याण की भावना से परिपूर्ण मनुष्य है।

*'रसकलश'— इसमें आरम्भिक स्फुट कविताएँ संकलित हैं। ये कविताएँ शृंगार प्रधान हैं तथा काव्य-सिद्धांत-निरूपण के लिए लिखी गई हैं।

*'वैदेही वनवास'— यह प्रबंध-काव्य है।

*'पारिजात'— यह इनके स्फुट गीतों का क्रमबद्ध संकलन है।

Ajanta
Page No.
Date

पुरस्कार और सम्मान

- 'कवि सम्राट' और 'साहित्य वाचस्पति' उपाधियों से सम्मानित हुए।
- वे दो बार 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सभापति रह चुके हैं।
- 12 सितम्बर 1937 ई० को नागरी प्रचारिणी सभा आरा की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा अभिनन्दन ग्रंथ भेंट की गई।
- 1938 ई० में 'प्रियप्रवास' पर 'मंगला प्रसाद' पुरस्कार मिला।